तुलसी
कॉमिक्स
संख्या 195 मूल्य 6.00
किस्मत के
रंग

कथा- विजय कुमार वत्स
चित्रांकन- राम वाईरकर
सम्पादन- प्रमिला जैन

धर्मपुर राज्य के एक उद्यान में

राजकुमारी सुपर्णा! हम कब तक इस प्रकार चोरों की तरह छिप- छिप कर मिलते रहेंगे?

युवराज! यदि आप चाहें तो यह चोरी - चोरी का 'मिलन गहरे सम्बन्ध' में बदल सकता है।

यह नहीं हो सकता सुपर्णा... हमारे राजकीय वंश की परम्परा के अनुसार लड़की वाला लड़के के पिता के पास लड़की का रिश्ता ले कर जाता है न कि लड़के का पिता।
ओह !... तब क्या हो सकता है ? हमें जीवन भर इसी प्रकार छिप-छिप कर ही मिलना होगा।
सुपर्णा, क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मेरे विषय में तुम स्वयं अपने पिता जी महाराज से बात करो ?
नहीं !...यह निर्लज्जता मुझसे नहीं हो सकेगी युवराज राजकुमार !
उद्यान के बाहर खड़ा धर्मपुर का राजा धर्मवर्मा उन दोनों का यह वार्तालाप सुन रहा था।
सुपर्णा... तुम हमसे बेशक कुछ न कहो पर हम जान गये हैं कि तुम इस युवक से प्रेम करने लगी हो।

उस रात को राजा धर्मवर्मा ने राजकुमारी सुपर्णा को अपने कक्ष में बुलवाया—

राजकुमारी सुपर्णा! हम तुमसे कुछ पूछना चाहते हैं। आशा करता हूं कि तुम मुझे सच-सच बताओगी।

पूछिये पिता जी महाराज! आप मुझसे क्या पूछना चाहते हैं?

सुपर्णा...वह युवक कौन है, जिससे तुम राज्य के एक उद्यान में मिलीं थीं ?

तत्काल ही राजकुमारी सुपर्णा का चेहरा फक्क पड़ गया। यह देख–
बेटी !...डरो नहीं...बस हमें तुम सच–सच उस युवक के बारे में बता दो।
पिता जी महाराज! वह युवक जीत-नगर का युवराज जतिन भद्र है।

क्या तुम उससे प्रेम करनी लगी हो ?
जी पिता जी महाराज!

अगर हम उसके साथ तुम्हारा रिश्ता तय कर दें तो ?
पिता जी महाराज! मैं आपसे क्या कहूं ?
लाज के भार से दबी सुपर्णा से पिता के सामने अब खड़ा रहा नहीं गया, वह दौड़ती हुई कक्ष से बाहर चली गई।

अपने कक्ष में ही जाकर उसने सांस ली।
चलो अच्छा ही हुआ कि पिता जी महाराज को मेरे और जतिन भद्र के सम्बन्धों के विषय में पता चल गया। अब पिता जी महाराज निश्चय ही जतिन भद्र के पिता के पास मेरा रिश्ता भेजेंगे।

अगले दिन ही जीतनगर के दरबार में –
महाराज, धर्मपुर राज्य के पुरोहित आपसे मिलना चाहते हैं।
जाओ! पुरोहित को आदरपूर्वक यहां ले आओ।

कुछ देर बाद ही धर्मपुर राज्य के राजा का पुरोहित शर्मानन्द दरबार में राजा सचिन भट्ट के सामने खड़ा हुआ था।
कहिए राजपुरोहित जी! जीतनगर में कैसे आना हुआ?
राजन, यह तो आप जान ही गये हैं कि मैं धर्मपुर राज्य के राजा धर्मवर्मा का राज पुरोहित हूं।

...मैं आपके पुत्र जतिन भट्ट के लिये महाराज धर्मवर्मा की पुत्री राजकुमारी सुपर्णा का रिश्ता लेकर आया हूं। राजकुमारी सुपर्णा बहुत ही सुन्दर व सुशील है। इस विवाह से दोनों राज्यों के सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आ जायेगी महाराज!

पुरोहित का प्रस्ताव सुन राजा साचिन भट्ट मुस्कराये।
राजपुरोहित जी! मैं इस प्रस्ताव के लिये राजा धर्मवर्मा का आभारी हूं। साथ ही मैं राजकुमार जतिन भट्ट का विवाह राजकुमारी सुवर्णा से करने को तैयार हूं।

ओह! भगवान ने आखिर मेरी सुन ही ली। पिता जी महाराज ने यह सम्बन्ध स्वीकार कर मेरी सारी चिन्ता दूर कर दी है। अब राजकुमारी सुवर्णा और मुझे मिलने से कोई नहीं रोक सकेगा।

राजा साचिन भट्ट का इतना कहना ही था कि राजपुरोहित ने नारियल निकाला और उसे साचिन भट्ट की ओर बढ़ाता हुआ बोला—
महाराज! ईश्वर की अनुकम्पा से यह सम्बन्ध पक्का हो गया है। इसलिये आप हमारे महाराज द्वारा भेजा गया विवाह का यह नारियल स्वीकार कर लीजिये।

साचिन भट्ट ने जैसे ही नारियल लेने के लिये हाथ आगे बढ़ाया—
आक् छीं...
ओह!...इस अवसर यह किसने छींक दिया?
ओह!...न जाने क्यों मेरी बाईं आंख फड़कने लगी है? साथ ही ऐसा महसूस हो रहा है कि कोई अदृश्य शक्ति मुझे नारियल लेने से रोक रही है!

इधर सचिन भट्ट को सोच में पड़ा देख—
महाराज...सोच में पड़ गये हैं! न जाने अब वे पुरोहित से क्या कहने वाले हैं?

अगले ही पल—
राजपुरोहित जी! लगता है विधाता इस सम्बन्ध पर अपनी मुहर लगाने के पक्ष में नहीं है...

...तभी तो जैसे ही मैंने नारियल लेने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, तभी किसी ने छींक दिया और उसी समय मेरी बाईं आंख भी फड़क उठी।
तो महाराज! इसे क्या मैं आपका इन्कार समझूं?

नहीं राजपुरोहित जी! आया हुआ नारियल वापस नहीं लौटेगा, पर अब मैं राजकुमारी सुपर्णा के साथ युवराज जतिन भट्ट का नहीं अपितु अपने छोटे पुत्र राजकुमार मतिनभट्ट का विवाह कर सकता हूं क्योंकि युवराज जतिन भट्ट व राजकुमारी सुपर्णा के विवाह में मुझे किसी अनिष्ट की आशंका हो रही है।

ठीक है महाराज!...मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार है। अब तो आप यह नारियल स्वीकार कीजिये।

राजपुरोहित के हाथों से जैसे ही राजा सचिन भट्ट ने नारियल लिया—
पल भर में ही यह क्या हो गया ? मेरे जीवन में खुशियों की बहार आने से पहले ही पतझर क्यों छा गई ? मैंने इस बात की तो कल्पना भी न की थी ?

अहा !...इसे कहते हैं अन्धे के हाथ बटेर लगना । मैं कितना सौभाग्यशाली हूं कि मेरा विवाह राजकुमारी सुपर्णा जैसी सौन्दर्यवती कन्या के साथ होगा!

उस रात जब युवराज जतिन भट्ट अपनी शैय्या पर लेटा-
राजकुमारी सुपर्णा को अपने छोटे भाई की भार्या के रूप में मैं क्या स्वीकार कर पाऊंगा ? क्या मेरा दिल इसके लिए गवारा करेगा ?

....विवाह के पश्चात् जब-जब राजमहल में राजकुमारी सुपर्णा को देखा करूंगा, तब-तब मुझे उसके साथ बिताये अपने मधुर क्षण याद आया करेंगे। और तब वे मधुर क्षण मेरे हृदय में शूल बन कर चुभा करेंगे।

मन में यह विचार आते ही युवराज जतिन भट्ट छटपटा कर शैय्या पर उठ कर बैठ गया।
इस दारुण अवस्था से बचने के लिये मैं आखिर करूं तो क्या करूं ?

तू इस राज्य को छोड़ कर कहीं दूर चला जा जतिन भट्ट ! अब इस राज्य से दूर जाकर ही तुझे चैन नसीब हो सकता है अन्यथा नहीं।

मुंह अंधेरे ही युवराज जतिनभट्ट अपने घोड़े पर सवार हुआ और उसने महल छोड़ दिया।
मुझे क्षमा करना पिता जी महाराज व मां कि मैं चोरों की भांति इस प्रकार राज्य छोड़ कर जा रहा हूं

सुबह होने पर जब युवराज जतिन भट्ट के शयन कक्ष को खाली पाया गया।
अरे! युवराज तो कक्ष में नहीं हैं? इतनी सुबह वे कहां चले गये? वे तो देर तक सोने के आदी हैं?

दासी ने तुरन्त ही यह खबर जाकर सचिन भट्ट को दी।
क्या कहा? युवराज अपने शयन कक्ष में नहीं हैं?
जी! खोजने पर वे महल में कहीं नहीं मिले।

ओह! तब जतिनभट्ट कहां चला गया?

इधर युवराज जतिन भट्ट बिना कुछ खाये-पिये दिन भर चलता रहा । आखिर वह एक वन में जब पहुंचा ।

क्या मैं बेघर बंजारे की तरह इसी प्रकार भटकता रहूंगा ? कुछ समझ भी तो नहीं आ रहा कि दुख की इस घड़ी मैं कहां जाऊं ? किधर जाऊं ? क्या करूं ?

उसकी कुछ समझ में नहीं आया तो वह एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा ।

ऊ...हू...हू...

अगले ही पल–
बू...हू...हू...
युवक ? क्यों रो रहे हो तुम ?

यह सुन रोते हुए ज़तिन भट्ट ने झटके से सिर ऊपर उठाया–
आप...?
मैं इस वन की देवी हूं, मेरा नाम हरितिमा है। बताओ तुम्हें क्या दुख है युवक ?

वन देवी ! अब मैं तुमसे क्या कहूं ? तुम तो मेरे कष्टों को जानती ही होगी ?
हां, मैं सब कुछ जानती हूं।...

...देखो ज़तिन भट्ट कठिनाइयों से इस प्रकार घबराकर, रोना पुरुषार्थ नहीं, अपितु कायरता है। धीरज रखो... समय आने पर सब ठीक हो जायेगा। मैं तुम्हें अदृश्य होने की दिव्य शक्ति प्रदान कर रही हूं, उस दिव्य शक्ति के प्रभाव से तुम जब चाहो... अदृश्य हो सकते हो...

वन देवी ! तुम आखिर मुझ पर इतनी कृपा क्यों कर रही हो ?

युवराज ! इस समय तुम उस वन की सीमा में हो जिस वन की मैं देवी हूं। मेरे वन में कोई भी प्राणी दुखी नहीं रह सकता है। आज से तुम भी मेरे वन के एक सदस्य बन गये हो। इसलिये तुम्हारी सहायता करना मेरा परम कर्तव्य है।

युवराज !...घबराना नहीं.... मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूं। जब आवश्यकता पड़े मुझे याद करना न भूलना।

वनदेवी के अदृश्य होने पर
इस वन की देवी मेरे साथ है इसलिये अब मुझे इसी वन में कुटिया बना कर रहना चाहिये।

जतिन भट्ट उसी समय कुटिया के निर्माण में जुट गया।

दिन ढलते-ढलते उसने कुटिया बना डाली ।
आज से यह कुटिया ही मेरा राजमहल है।
वाह...री तकदीर! कल तक जो महलों में रहता था, अब वह इस झोपड़ी में रहेगा।
इधर जब राजपुरोहित धर्मपुर पहुंचे —
राजपुरोहित जी! दे आये विवाह का नारियल राजा सचिन भट्ट को ?
हां महाराज! दे आया नारियल! आने वाली पूर्णिमा का दिन विवाह के लिये तय भी कर आया हूं। पर मैं राजकुमारी सुपर्णा का विवाह युवराज जतिन भट्ट के साथ नहीं अपितु उसके छोटे भाई राजकुमार मतिनभट्ट के साथ तय करके आया हूं महाराज!
यह आप क्या कह रहे हैं राजपुरोहित जी? हमने तो आपसे युवराज जतिन भट्ट के साथ राजकुमारी सुपर्णा का सम्बन्ध तय कर आने को कहा था, फिर यह गलती आपने क्यों की?
क्षमा करें महाराज! मैंने तो राजा सचिन भट्ट से राजकुमारी सुपर्णा के लिये युवराज जतिनभट्ट का ही सम्बन्ध तय करने की बाबत में कहा था, पर कुछ अपशकुन घट जाने के कारण... उन्होंने अपने छोटे पुत्र मतिनभट्ट के साथ ही राजकुमारी सुपर्णा का सम्बन्ध तय होना स्वीकार किया।

यह आप क्या अनर्थ कर आये राजपुरोहित जी?
अनर्थ! खुशी की बात को आप अनर्थ कह रहे हैं महाराज? मैं कुछ समझा नहीं!

आप कुछ समझेंगे भी नहीं... पर संक्षेप में इतना ही जान लीजिये कि जो कुछ भी हुआ है, अच्छा नहीं हुआ।

राजा धर्मवर्मा उसी समय राजकुमारी सुपर्णा के पास पहुंचे और उसे सारी बात बताने के पश्चात् बोले —
राजकुमारी सुपर्णा... किस्मत से अनहोनी घट चुकी है...अब उसे होनी में बदलना तुम्हारे हाथ में है। युवराज जतिनभट्ट के स्थान पर अब तुम्हें राजकुमार मतिनभट्ट के साथ विवाह सम्बन्ध स्वीकार करना ही होगा।
नहीं!...यह नहीं होगा पिता जी महाराज! मैं मतिनभट्ट से नहीं अपितु जतिनभट्ट से प्रेम करती हूं।

बेटी!...मैं यह सब जानता हूं फिर भी अपने राजवंश की मर्यादा की खातिर तुमसे एक ही विनती करता हूं कि इस सम्बन्ध को स्वीकार करने में ही भलाई है। नहीं तो... सबके सामने हमारी नजरें ऐसी नीची होंगी कि फिर कभी ऊपर नहीं उठ सकेंगी
ओह!...पिता जी महाराज! आपने तो मुझे बड़े धर्म संकट में डाल दिया है, पर विश्वास रखिये कुल को बट्टा लगाने का कोई काम मैं नहीं करूंगी।

तो इसे क्या मैं तुम्हारी स्वीकृति समझूं ?
जी पिता जी महाराज !

राजा धर्मवर्मा के जाने के पश्चात् राजकुमारी सुपर्णा जी भरकर रोई।
युवराज जतिनभट्ट ! मुझे क्षमा कर देना, मेरा विवाह तुम्हारे छोटे भाई के साथ तय हो गया है इसलिये अब कभी भी मैं तुमसे मिलने बाग में नहीं आ सकूंगी।

उधर वन में जतिनभट्ट जंगली फलों को खा-पी कर अपने पेट की क्षुधा शान्त करता दिन बिताने लगा।

उधर जीतनगर में गुप्तचर राजा सचिन भट्ट से कह रहे थे —
महाराज !...हमने चारों ओर दूर-दूर तक युवराज जतिनभट्ट की खोज की, पर वे कहीं नहीं मिले।
ओह !.. हमें आज तक यह बात समझ में नहीं आयी कि युवराज जतिनभट्ट इस प्रकार महल छोड़ कर क्यों गये ? और गये तो कहां गये ?

ठीक पूर्णिमा के दिन राजकुमार मतिनभट्ट की बारात धर्मपुर राज्य पहुंची।
Monika

राजकुमारी सुपर्णा ने मतिन भट्ट के साथ फेरे लिये

विदा के समय—
बेटी!...ससुराल में कुल की लाज रखना।

डोली बारात के साथ जीतनगर की ओर रवाना हो गयी।

डोली में बैठी सुपर्णा सोच रही थी....
पिताजी महाराज के अनुरोध पर मैंने मतिनभट्ट से विवाह तो कर लिया है. पर मैं उसकी पत्नी बन कर कदापि नहीं रह पाऊंगी।

उसने अपनी उंगली में पहनी हीरे की अंगूठी उतारी और उसका हीरा चाट लिया।
जातिन भट्ट से बेवफाई कर मैं जीवित रह भी कैसे सकती थी?

अगले ही पल

जीतनगर पहुंचने पर जब डोली का पर्दा उठाया गया—
अरे ! दुल्हन तो मृत पड़ी हुई है ?
ओह ! यह क्या गजब हो गया ?

कुछ देर पहले जिस जीतनगर में वधू के स्वागत की तैयारियां चल रही थीं, अब वहां गहरा मातम छा गया ।

बड़े ही गमगीन वातावरण में सुपर्णा की नश्वर देह को अग्नि को समर्पित किया गया ।

इधर वन में जतिनभट्ट उदास सा बैठा सोच रहा था ।
कल पूर्णिमा थी ! कल सुपर्णा और मतिनभट्ट का विवाह हो गया होगा और आज जीतनगर में सुपर्णा का खूब धूमधाम से स्वागत किया जा रहा होगा ।

वह यह सब बैठा सोच रहा था कि वन देवी उसके सामने प्रकट हुई।
जतिनभट्ट! आज तुम फिर दुखी हो? क्यों?

वनदेवी!... तुम सब कुछ जानते हुए भी आज फिर जानबूझ कर मेरे जख्मों को कुरेद रही हो! फिर भी मेरे ही मुख से सुनना चाहती हो तो सुनो, मेरी प्रेयसी सुपर्णा का कल मेरे छोटे भाई के साथ विवाह हुआ होगा। बताओ मैं दुखी न होऊं तो क्या करूं?

जतिन भट्ट!... किस्मत ने यदि तुम्हारे साथ क्रूर नाटक खेला है तो उसने राजकुमारी सुपर्णा को भी नहीं बख्शा है, उसने तुम्हारे वियोग में मौत को गले लगा लिया है।
क्या....? क्या सुपर्णा मर गई?

हां जतिनभट्ट! वह यह नश्वर संसार छोड़ कर दूसरे लोक में जा चुकी है।

तब वनदेवी ने विस्तारपूर्वक जतिनभट्ट को सारा घटनाक्रम बताया—
जब सुपर्णा ही इस लोक में न रही तो मेरा भी इस लोक में क्या काम? मैं भी अब जीवित नहीं रहूंगा वनदेवी।
प्रेम में पागल न बनो जतिनभट्ट! जानते भी हो जब सुपर्णा ने मौत को गले लगाया था.....

...उस समय तक वह तुम्हारे भाई के साथ सात फेरों के बन्धन में बंध चुकी थी। सोचो! किसी दूसरे की पत्नी के वियोग में जान देना क्या उचित होगा?

तब तुम ही बताओ वन देवी कि मैं क्या करूं?

जतिनभट्ट! तुम अपना विवाह करके अपने राज्य वापस लौट जाओ।

मैं अपना विवाह कर लूं? लेकिन किसके साथ?

हां जतिनभट्ट ! उसके भाई नरकासुर ने जो कि नरकलोक का राजा है उससे कुपित होकर नरकलोक से निकाल दिया है। अब कुछ क्षणों बाद ही वह पृथ्वी पर तुम्हारे सामने उतरने ही वाली है।

हां मैंने !...पृथ्वीलोक की ओर आती टार्किका को अपने सम्मोहन पाश में बांध दिया है, जिससे बंधी हुई वह हमारे सामने ही पृथ्वी लोक पर आकर उतरेगी।

ओह !...यह तो आपने बड़ी विचित्र बात बताई है वनदेवी ?

सुनकर वनदेवी मुस्कराई।
राजकुमारी तार्किका...तुम्हारा और जतिनभट्ट का मिलाप करने के लिये ही मैंने अपनी सम्मोहन शक्ति के द्वारा तुम्हें यहां बुलाया है।
क्या?

हां तार्किका! जतिनभट्ट तुम्हारा होने वाला पति है, इसे प्रणाम करो।

अगले ही पल-
मैं आपको प्रणाम करती हूं।

तत्पश्चात्-
आज शुभबेला है। मैं चाहती हूं कि इस शुभ बेला में तुम दोनों का विवाह सम्पन्न हो जाए।
आपकी हर इच्छा हमारे लिए सहर्ष शिरोधार्य है वनदेवी!

तब वनदेवी की उपस्थिति में उन दोनों ने एक-दूसरे के गले में जयमाला डाली
आज से तुम दोनों पति-पत्नी हो।

जब उन दोनों को आशीर्वाद दे वनदेवी अदृश्य हो गयी तो-
तार्किका ! मेरी समझ में यह बात नहीं आई कि तुम्हारे भाई नरकासुर ने किस बात से कुपित होकर तुम्हें नरकलोक से निष्कासित कर दिया है ?
यह एक लम्बी कहानी है स्वामी ! फिर भी जब आपने इस विषय में पूछा ही है तो मैं आपको सब कुछ बताऊंगी।

सुनिये ! नरकलोक के राजा नरकासुर मेरे बड़े भाई हैं। राजगद्दी पर बैठने के बाद से ही उनके मन में बार-बार एक ही बात आती थी-

...और वह बात यह थी-
सब लोग मरने के पश्चात नरक की अपेक्षा स्वर्ग को जाना पसन्द करते हैं। तब क्यों न नरक को स्वर्ग बना दिया जाये ?

...इस कार्य के लिये उन्होंने हर क्षेत्र में कुशल और बलशाली असुरों की सभा बुलाई। बड़े-बड़े दिग्गज असुर उस सभा में आये। कई असुर आते ही अपने स्वभाव के अनुसार दरबार में गंदगी फैलाने लगे।
आक् थू
आक् थू

उनमें अधिकांश ऐसे असुर थे जो कभी नहाते ही नहीं थे। जिसके परिणामस्वरूप पूरी सभा में दुर्गन्ध फैल गयी।
ओह! कैसी दुर्गन्ध फैली हुई है? सांस भी लेनी दूभर हो रही है!

नरकासुर ने तुरन्त ही असुर सेवकों को आदेश दिया-
पृथ्वी से लाये गये इत्र का सारे दरबार में छिड़काव किया जाये-

अगले ही पल-
ओह!...इत्र के छिड़काव से कुछ चैन मिली है।

अब नरकासुर ने सबसे कहा–
आज हम एक विशेष प्रयोजन से यहां एकत्रित हुए हैं। आप तो जानते ही हैं कि नरक की स्वर्ग से पुरानी दुश्मनी चली आ रही है। हमें हर विषय में स्वर्ग से नीचा देखना पड़ता है। अतः हमें कोई ऐसा प्रयास करना चाहिये कि नरक भी स्वर्ग की तरह सुन्दर बन जाए।
महाराज! ऐसा करने से तो नरक की अपनी पहचान समाप्त हो जायेगी। तब स्वर्ग और नरक में अन्तर ही क्या रह जायेगा?
इसी बात को समझने के लिए ही तो हम लोग यहां जमा हुए है। स्वर्ग के लोग कितने साफ सुथरे और व्यवस्थित ढंग से रहते हैं उन्हें अगर भय है तो हम लोगों से ही है। अतः इस क्षेत्र में तो हम लोग उनसे बलशाली ही हैं। कोशिश यह की जानी चाहिये कि स्वच्छता और सुन्दर ढंग से जीने में भी हम उनसे बाजी मार लें।
आप ठीक कह रहे हैं महाराज! स्वर्ग के लोग हमेशा से ही हमें हेय दृष्टि से देखते आये हैं, उनकी बराबरी पर आने के लिये हमें कुछ करना ही होगा।
अब आप लोग ही बताइए कि इसके लिये हम क्या उपाय करें?
महाराज, नरक को स्वर्ग के समान स्वच्छ व सुन्दर बनाने के लिये आपको कमल यज्ञ करना चाहिये।

कमल यज्ञ ?
हां महाराज ! एक हज़ार एक लाल कमल के फूलों की आहुति वाला यज्ञ करना होगा । सुना है, यह यज्ञ हर इच्छा की पूर्ति करता है ।

महाराज लाल कमल पृथ्वी पर ही खिलते हैं । इसके लिये पृथ्वी लोक पर जाना होगा ।
ओह !.. तब तो हम उस यज्ञ को अवश्य करेंगे ।

उसी दिन नरकासुर के आदेश पर सैकड़ों असुर लाल कमल लाने पृथ्वी की ओर चल दिये ।

पृथ्वी पर जाकर लाल कमल तोड़ते और उन्हें ले नरकलोक की ओर लौट पड़ते ।

नरक लोक तक पहुंचते-पहुंचते एक आध कमल ही सही हालत में रह पाता, बाकी सब मुरझा जाते ।
मुरझा गये कमलों को फैंक दो, और सही कमलों को नरकलोक के तल में एकत्रित करते जाओ ।

ऐसा ही किया जाने लगा—
जल्दी से एक हज़ार एक लाल कमल एकत्रित हों और मैं कमल यज्ञ सम्पन्न कर अपनी इच्छा पूरी करूं ?
अपने भाई की इस सनक को देख मैं सोचती
भइया प्रकृति के नियम को तोड़ने चले हैं जो कि गलत है। भइया को गलत मार्ग पर जाने से बचाने के लिये मुझे कुछ करना चाहिये।

...ये लालकमल ही सारे झगड़े की जड़ हैं। न ये लाल कमल एकत्रित हो पायेंगे न भइया कमल यज्ञ पूरा कर पायेंगे...

एक बार जब नरकलोक के सब वासी सोये हुए थे तो मैंने ताल में एकत्रित किये सारे लाल कमल नष्ट कर डाले।

सुबह होने पर—
ओह !...तालाब में एक भी कमल नहीं है ? सारे के सारे कमल तट पर नष्ट हुए पड़े हैं !

नरकासुर ने उसी समय आपातकालीन दरबार बुलाया—
किसने हमारे ताल के कमल नष्ट करने की जुर्रत की है ?

अगले ही पल मैं निडर उनके सामने जा खड़ी हुई।
भइया! मैंने यह जुर्रत की है...
क्या?

हां भइया! मैं नहीं चाहती कि कमल महायज्ञ सम्पन्न कर तुम स्वर्ग की बराबरी करने की इच्छा पूरी कर सको।
ओह! तो तुमने आस्तीन का सांप बन कर हमें डसा है तारिका! हम इसी समय तुम्हें नरकलोक से निष्कासित करते हैं। जाओ हमारी नजरों से दूर चली जाओ।

भइया का यह आदेश पाते ही मैं पृथ्वी लोक पर चली आई। स्वामी! इससे आगे की कहानी आप जानते ही हैं।
ओह!... तुम्हारे भइया वास्तव में ही प्रकृति के विरुध्द कार्य करना चाहते हैं! यदि वे ऐसा करने में सफल हो गये तो?

स्वामी! नरकलोक से मेरे चले आने के पश्चात् भइया पुनः लाल कमलों को एकत्रित करने में जुट गये होंगे। यदि वे इस...

कार्य में सफल हो गये तो नरक लोक का क्या होगा? क्या उसका आस्तित्व समाप्त हो जायेगा ?
ऐसा नहीं होगा तार्किका...

मैं रोकूंगा उन्हें...

लेकिन कैसे ? अपनी बात के आगे भइया किसी और की बात नहीं सुनते
तार्किका !... घबराओ नहीं। तुम्हारा दुख अब मेरा दुख है। वनदेवी ने मुझे अदृश्य होने की दिव्य शक्ति प्रदान की है...

...तुम मुझे अपने साथ नरकलोक ले चलो। मैं वहां पहुंच कर तुम्हारे भाई नरकासुर को प्रकृति के विरुध्द कार्य करने से रोकने की पूरी कोशिश करूंगा।
...और यदि आप उन्हें न रोक पाये तो ?

बस! ज्यादा से ज्यादा यह होगा तार्किका कि वे मुझे जान से मार देंगे। मरना मनुष्य को केवल एक बार ही होता है, बार-बार नहीं। यदि किसी अच्छे कार्य के लिये मेरे प्राण काम आये तो मैं स्वयं को धन्य समझूंगा।
शुभ-शुभ बोलिए स्वामी !

तब तुम मुझे अपने साथ इसी समय नरकलोक ले चलो।
ठीक है! आपकी ऐसी ही इच्छा है तो मैं आपको नरकलोक अवश्य ले चलूंगी।

तब जतिनभट्ट ने वन में ही बहने वाली गंगा नदी का जल एक पात्र में भरा और उसे लेकर टार्किका का हाथ पकड़ नरकलोक की ओर चल पड़ा।
टार्किका... अब तुम्हें और हमें नरकलोक में कोई नहीं देख पायेगा।इस समय हम अदृश्य रूप में हैं।

शीघ्र ही वे नरकलोक में जा पहुंचे।
वे रहे मेरे भइया नरकासुर...

जब वे नरकासुर के समीप पहुंचे।
ओह!...किसी जीवित मनुष्य की गंध आ रही है! लगता है नरकलोक में मनुष्य घुस आया है?

अगले ही पल जतिनभट्ट उसके सामने प्रकट हो गया। टार्किका व उसको अपने सामने खड़ा देख वह हतप्रभ रह गया।
टार्किका तुम! तुम्हें तो मैंने नरकलोक से निष्कासित कर दिया था, और तुम्हारे साथ यह मानव कौन है?
भइया! ये मेरे पति जतिनभट्ट हैं। इनके अनुरोध पर ही मैं इन्हें यहां लेकर आई हूं।

...तब उनके अच्छे व बुरे कार्यों का लेखा-जोखा कर नरक व स्वर्ग भेजा जाता है। यदि नरक भी स्वर्ग बन गया तो नरक की सजा पाये प्राणी कहां जायेंगे ? उनका क्या होगा ?

ओह!...इस विषय में तो मैंने सोचा ही नहीं ?

महाराज ! आपके मन में आवश्यकता से अधिक तामसी प्रकृति जागृत हो गयी है, जिसकी वजह से आपके मन में प्रकृति के विरुध्द कुछ करने की इच्छा जागृत हुई...

...आपकी उस तामसी इच्छा का यह गंगा जल नाश करेगा। यह पृथ्वी लोक का पवित्र जल है। इसका आचमन कर आप अपने मन की शुध्दि कर लीजिये महाराज!

नरकासुर ने जतिनभट्ट से गंगाजल का पात्र ले उसका गंगाजल पिया।
अहा... बन गया काम!

गंगाजल पीने के पश्चात –
अहा!...गंगाजल पीते ही तमाम शरीर में शीतलता प्रवाहित हो गयी है। अब मुझे महसूस हो रहा है, कि मैं कितनी बड़ी गलती करने जा रहा था!
महाराज! अब मेरे और तार्किका के लिये क्या आज्ञा है?

तार्किका ने तुमसे विवाह कर लिया है, इसलिये यह तो अब नरकलोक में रह नहीं सकती है। इसे तुम्हारे साथ पृथ्वीलोक ही जाना होगा।

तब नरकासुर से विदा ले जतिनभट्ट व टार्किका पृथ्वीलोक की ओर वापस लौट पड़े।

वे पुनः पृथ्वी पर वन में पहुंचे। तत्पश्चात्
वन देवी!... तुम कहां हो?

तत्काल ही वनदेवी उसके सामने प्रकट हो गयी।
वनदेवी, मैं टार्किका के साथ अपने राज्य वापस लौट रहा हूं, लेकिन जाने से पहले मैं तुम्हारा आभार प्रकट करना चाहता हूं। अगर बुरे समय में तुम मेरा ढांढस न बंधाती तो मैं कबका टूट गया होता।
जतिनभट्ट!... मैंने केवल अपना कर्तव्य निबाहा था। मुझे खुशी है कि तुम पुनः दोबारा अपने परिवार के बीच जा रहे हो। जाओ, सदा सुखी रहो।

जतिनभट्ट जब टार्किका के साथ जीतनगर पहुंचा—
ओह!... बेटा तुम आ गये! कहां चले गये थे तुम?
साचिन भट्ट ने जतिनभट्ट को गले लगा लिया। टार्किका को सहर्ष ही उन्होंने पुत्र वधु के रूप में स्वीकार कर लिया।
समाप्त